Dr M.K. Jha.
Dept of Sociology
V.S.J College, Rajnagar.
B.A. part - II
paper - III
Indian Society

Question - नगरीय समुदाय की अवधारणा एवं प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Ans - नगरीय समुदाय वह क्षेत्र है जहाँ जनसंख्या की बहुलता तथा विविधता पायी जाती है। व्यक्तियों के बीच औपचारिक एवं द्वितीयक सम्बन्धों की प्रधानता होती है। नगरीय समुदाय में श्रम विभाजन तथा विशेषीकरण द्वारा आर्थिक कार्य किए जाते हैं। नगरीय समाज में विज्ञान तथा आविष्कार का स्थान होता है जहाँ के व्यक्ति भौतिकता एवं कृत्रिमता पर आधारित होते हैं।

बर्गेल के अनुसार
"प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि नगर क्या है, किन्तु किसी ने भी संतोषजनक परिभाषा नहीं दी है" अर्थात् नगर केवल एक निवास का स्थान ही नहीं, वरन् एक विशिष्ट पर्यावरण का भी सूचक है। यह जीवन का एक विशिष्ट ढंग और एक विशिष्ट संस्कृति का सूचक भी सूचक है। जहाँ जनसंख्या, आकार, और कार्य प्रणाली में भिन्नता है। अतएव सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है फिर भी कुछ समाजशास्त्रियों का विचार जानने योग्य है।

W. E. Willcox के अनुसार "नगर का तात्पर्य उस क्षेत्र से है जहाँ प्रति वर्ग मील जनसंख्या का घनत्व 1,000 व्यक्तियों से अधिक हो तथा व्यावहारिक रूप में वहाँ खेती न होती हो" इस परिभाषा में नगरीय समुदाय के जीवन-प्रणाली एवं कार्य प्रणाली का अभाव है।

कानूनी दृष्टिकोण से शहर या नगर वह स्थान है जिसे किसी उच्च सत्ता के चार्टर द्वारा नगर घोषित किया गया हो। नगर की यह परिभाषा आधुनिक संदर्भ में भले ही ठीक हो, लेकिन प्राचीन समय में चार्टर के द्वारा किसी स्थान को नगर घोषित करने की प्रथा नहीं रही है।

C.P. Loomis ने समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण पर नगर की परिभाषा दिये हैं उनके अनुसार नगर एक ऐसा समाज है जिसे अन्य समाजों से जनसंख्या के आकार और घनत्व, व्यवसाय की प्रकृति तथा सामाजिक सम्बन्धों की भिन्नता जैसी विशेषताओं के आधार पर पृथक किया जा सकता है।" इस आधार पर Davis, Lwirth और Mumford के परिभाषा मिलता-जुलता मिला है। अन्त में यह कहा जा सकता है कि नगर एक समुदाय है जो आर्थिक, सामाजिक, [illegible] सांस्कृतिक विषमता, जनसंख्या का अधिक घनत्व, नियंत्रण के औपचारिक साधन, व्यक्तिवाद की प्रधानता एवं प्रतिस्पर्धा [illegible] कृत्रिमतापूर्ण जीवन पाए जाते हैं।

विशेषताएं:

[illegible] — नगरीय समुदाय के निम्नलिखित विशेषताएँ मान्य हैं जैसे:-

1. अधिक जनसंख्या: नगर में जनसंख्या का बड़ा आकार एवं घनी जनसंख्या उल्लेखनीय है। जनसंख्या की अधिकता के आधार पर नगर, महानगर एवं विराट नगर का निर्माण होता है।

2. जनसंख्या की विभिन्नता: नगर में विभिन्न धर्मों, मतों, सम्प्रदायों, जातियों, वर्गों, प्रजातियों, भाषाओं एवं प्रान्तों से सम्बन्धित लोग निवास करते हैं। अतः नगर की जनसंख्या में विभिन्नता पायी जाती है।

3. व्यवसायों की बहुलता एवं विभिन्नता - नगर में कार्यों की बहुलता होती है। वहाँ अनेक प्रकार के व्यवसाय पाये जाते हैं कपड़ा, दवाओं, लोहा, मशीन निर्माण सिगरेट, सीमेन्ट आदि प्रकार के व्यवसाय पाए जाते हैं।

4. श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण: नगरीय समुदाय में कार्य को बाँट कर किया जाता है। यहाँ व्यक्ति अलग-अलग व्यवसायों में जुड़ कर जीवन यापन करते हैं। साथ ही एक व्यक्ति किसी एक ही कार्य को विशेषज्ञ होते हैं। नगर में श्रम विभाजन और विशेषीकरण के कारण पारस्परिक निर्भरता बनी रहती है।

5. कृत्रिमता:
नगर समुदाय में व्यक्तियों का जीवन बनावटी, चमक-दमक एवं आडम्बर पर आधारित रहता है। नगरीय व्यक्ति दिखावापन में अधिक विश्वास करते हैं।

Scanned with Cam

6. व्यक्तिवादिता :- नगरीय समुदाय में व्यक्ति समुदाय की अपेक्षा स्वयं के सम्बन्ध में अधिक सोचते हैं अपने को अधिक चतुर एवं साधन सम्पन्न प्रमाणित करना चाहते हैं।

7. गतिशीलता - नगर में सामाजिक एवं भौगोलिक गतिशीलता अधिक पायी जाती है नगरीय व्यक्ति धाम एवं पद के लिए स्थान एवं व्यवसाय में परिवर्तन करते रहते हैं।

8. सामाजिक समस्याए! नगर को अपराध एवं समस्या का केन्द्र कहा गया है। नगर में अपराध, बाल-अपराध के अपराध बेकारी, प्रदूषण, वर्ग संघर्ष, कुपोषण, एवं वेश्यावृत्ति और गन्दी बस्तियाँ उल्लेख समस्याओं में है।

9. शिक्षा एवं संस्कृति का केन्द्र -
नगर में शिक्षण संस्थाए सर्वत्र पायी जाती है जैसे महाविद्यालय, प्रशिक्षण केन्द्र, कला-विज्ञान के प्रौद्योगिक क्षेत्र महत्वपूर्ण है। नगर भाषा, साहित्य एवं ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

आजकल नगरीय समुदाय की विशेषताओं में स्वास्थ्य सुविधा मनोरंजन, राजनीतिक गतिविधियाँ एवं द्वैतीयक सम्बन्धों की प्रधानता महत्वपूर्ण है।

Scanned with Cam